स्नातक स्तर के विधार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता पर उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

अमित कुमार* और डॉ0 कल्पना अग्निहोत्री**

सारांश

भारत की पर्यावरणीय झलक काफी जटिल एवं विस्तृत है। यहाँ का पर्यावरण भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक भाषाई दृष्टिकोण से काफी भिन्न है। अतः यह आवश्यक है कि व्यक्तियों में वाल्यावस्था से ही जागरूकता का ज्ञान उत्पन्न किया जाय।चक्रवर्ती (1988)3 ने ए क्रिटकल स्टडी ऑफ इटेंलीजेंस, सोशियो इकोनोमिक बैकग्राउण्ड ऑफ द फैमली, एजूकेशन इन्वायरमेन्ट ऑफ द फैमली एण्ड क्वालिटी ऑफ स्कूल्स इन चिल्ड्रन प्रकरण के अर्न्तगत 150 विद्यार्थियों का चयन कर शोध कार्य किया, शोध कार्य द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि परिवार की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का परिवार के शैक्षिक पर्यावरण से धनात्मक सह सम्बन्ध है तथा बालकों की बुद्धि का उनके परिवार की सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि व शैक्षिक पर्यावरण से उच्च धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। सरकार (2013),31 ने ए स्टडी ऑन इनवारन्मेन्ट अवेयरनेस एमोंग सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट इन रिलेशन टू सोशियो इकोनोमिक स्टेटस प्रकरण के अन्तर्गत 160 विद्यार्थियों (छात्र/छात्रायें) का चयन ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र से किया गया। इस शोध में निम्नलिखित परिणाम निकले।विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक आर्थिक स्थिति में धनात्मक सह सम्बन्ध है।पर्यावरण जागरूकता का लड़के तथा लड़कियों के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं। स्पष्ट है कि पर्यावरण से सम्बन्धित समसयाएं किसी एक व्यक्ति, वर्ग अथवा समाज की नही हैं, सम्पूर्ण विश्व इससे प्रभावित है। इस स्थिति का सामना करने और समाधान करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना और अपनी धरती, अपनी प्रकृति, अपने पर्यावरण को संरक्षित एवं संद्धित करने हेतु अपना योगदान देना होगा।

प्रस्तावना

देश विदेश में महानगरों मे व्याप्त पर्यावरण प्रदूषण में वायु प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, सामाजिक प्रदूषण आदि प्रमुख है। नगरों तथा महानगरों में प्रदूषण के कारण अनेक प्रकार की बीमारियां तथा रोग उत्पन्न होते हैं। जिनका नगर वासियों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और कार्य दक्षता बुरी तरह प्रभावित होती है। प्राकृति के क्षेत्र में मानव का बढ़ता हस्तक्षेप व दखलन्दाजी ने सम्पूर्ण परिस्थिति की व्यवस्था में व्यवधान पैदा कर दिया है, विश्व में लगी हथियारों की प्रतिस्पर्धा से व आगणिक विस्फोटों से पूरा वायुमण्डल प्रदूषित होता जा रहा है। समय समय पर पड़ने वाली प्रकृतिक आपदायें अकाल, सूखा, अतिवृष्टि या फिर बढ़ता तापमान एसिड रेन, इसी वायुमण्डल प्रदूषण का प्रभाव है। इन सभी समस्याओं का अंकलन पर्यावरण बदलाव की विभीषिका से वचते रहने के लिये पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। क्योंकि स्नातक स्तर को विद्यार्थियों की आयु 18–25 वर्ष के मध्य होती है जो एक युवा वर्ग है, जिसकी जनंसख्या भारत में सर्वाधिक है और देश का युवा वर्ग ही देश के भविष्य का निर्धारण करता ह। यह वर्ग जोशीला, स्वतंत्र चिन्तन करने वाला तथा सजग होता है। यदि युवा वर्ग को पर्यावरण के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक कर दिया जाये तो भारतवर्ष में पर्यावरणीय समसया का लगभग अन्त निश्चित है। चूंकि शिक्षा का क्षेत्र सीधे समाज से जुड़ा होता है। अतः उपर्युत विवेचित समस्याओं के अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध शीर्षक ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन का चयन प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

शोध कार्य के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

*एम0फिल0 छात्र, शिक्षा विभाग छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर(उ0प्र0)
**प्रवक्ता, शिक्षा विभाग छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर(उ0प्र0)

4. स्नातक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. स्नातक स्तर के छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव है।
2. स्नातक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में आकड़ों के संकलन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।कानपुर नगर मे 5 व्यवसायिक व 5 अव्यवसायिक महाविद्यालयो का चयन लाटरी विधि द्वारा किया गया तथा चयनित महाविद्यालयो से यादृच्छिक स्तरीकृत न्यादर्श प्रविधि द्वारा 300 छात्रो का चयन किया गया जिसमें 150 छात्र व 150 छात्राओं का चयन हुआ।

उपकरण

प्रस्तुत शोध के लिए प्रदत्तों के संकलन के लिए डा0 प्रवीन कुमार झा म्दअपतंदउमदज ूतमदमे ।इपसपजल डमेंनतमश तथा राजवीर सिंह राधे श्याम व सतीश कुमार का ैवबपव म्बवदवउपब ंजंजने ंबंसम के हिन्दी रूपान्तरण का प्रयोग किया गया

पर्यावरण जागरूकता मापनी तथा सामाजिक आर्थक स्तर मापनी के प्रशासन हेतु शोधार्थी प्रत्येक चयनित महाविद्यालय में गया और वहां के प्रधानाचार्य से अनुमति लेकर अध्ययन या शोध से सम्बन्धित छात्रों की कक्षाओं में गया। कक्षा से चयनित विद्यार्थियों (न्यादर्श) को आवश्यक निर्देश देकर परिणाम के उद्देश्यों को समझा दिया गया। कि उन्हे परीक्षण आसानी से हो। तदोपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी के प्रत्येक परीक्षण की एक एक प्रश्न पुस्तिका उपलब्ध करा दी गयी। परीक्षणों को भरने के लिए 20–20 मिनट का समय दिया गया।

उपर्युक्त समय के उपरान्त विद्यार्थियों से परीक्षण को संग्रहित कर लिया गया। इस कार्य में छात्र एवं छात्राओं ने पूर्ण सहयोग किया। इन परीक्षणों पर प्रदासंकलन करने के लिए विभिन्न महाविद्यालयों में परीक्षण प्रशासन का कार्य अलग–अलग निर्धारित तिथियों पर सम्पन्न किया गया।

पर्यावरण जागरूकता योग्यता मापनी की विश्वसनीयतानिम्नलिखित तीन विधियों से प्राप्त की गयी। EAAM परीक्षण की वैधता सुनिश्चित करने के लिए सह सम्बन्ध पूर्णांक की गणना वर्तमान पैमाने पर की गयी इस सह संबन्ध गुणांक का उत्तर .83 आया जो कि एक उच्चतर का सह सम्बन्ध गुणांक हो गया।

अतः इसके लिये प्रवीण कुमार झा के पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग ऑकड़े एकत्रित करने के लिये किया गया है। का चयन करना है।

ई0ए0एम0 परीक्षण मानकीकृत परीक्षण है। परीक्षण में कुल 51 प्रश्न है,जो कि सम्पूर्ण पर्यावरण से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक प्रश्न के सही उत्तर पर 1 अंक प्रदान करके उनका योग कर लिया गया। इस परीक्षण में 43 प्रश्न सकारात्मक और 8 प्रश्न नकारात्मक है।

ई0ए0एम0 परीक्षण की वैधता सुनिश्चित करने के लिये सह सम्बन्ध गुणांक की गणना वर्तमान पैमाने पर प्राप्त अंकों तथा एनर्जी के पर्यावरण की जागरूकता के पैमाने पर की गयी इस सह सम्बन्ध गुणांक का उत्तर .83 आया जो कि एक अति उच्चतर का सह सम्बन्ध गुणांक था। छात्रों द्वारा पूरित सामाजिक आर्थिक स्तर प्रश्नावली प्राप्त करने के पश्चात सम्बन्धित प्रश्नावली के उत्तरों की गणना की गयी, प्रश्नावली में सही उत्तर के मानकानुसार अंक प्रदान किये गये, तथा गलत उत्तर का कोई भी अंक नहीं दिया गया।

सारणी सं01

सामाजिक आर्थिक स्तर की 5 बिन्दु अनुमतांक मापनी तालिका

क्र0सं0	पर्यावरण जागरूकता के स्तर	प्राप्तांक
1	उच्चतम स्तर	114 से अधिक
2	औसत स्तर	71–89
3	निम्नतम स्तर	49 और इससे नीचे

गणना करने के पश्चात् प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन, t–(टी) परीक्षण के स्तर को सांख्यिकी विधि द्वारा ज्ञात किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

H1 स्नातक स्तर के व्यवसायिक वर्ग तथा अव्यवसायिक वर्ग के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर है।

H01 स्नातक स्तर के व्यवसायिक वर्ग तथा अव्यवसायिक वर्ग के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 2
स्नातक स्तर के उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता से सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन तथा t–मान

क्र0सं0	तुल्य समूह	संख्या(N)	मध्यमान (N)	मानक विचलन (S.D.)	df	t–मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च	32	36.74	8.01			
2.	निम्न	39	34.90	8.54	69	2.06	0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त ताकिलका सं0 4.2.5 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि छात्रों की उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 36.74 तथा मानक विचलन 8.01 है, तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 34.90 मानक विचलन 8.54 प्राप्त किया गया तथा दोनो मध्यमानों का t मान 2.06 ज्ञात किया गया जो 0.05 सार्थक स्तर पर t तालिका मान 2.00 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है तथा शोध परिकल्पना H1 स्वीकृत की जाती है। शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति द्वारा स्पष्ट है कि छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक प्रभाव है।

H2 स्नातक स्तर के व्यवसायिक वर्ग तथा अव्यवसायिक वर्ग की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर है।

H02 स्नातक स्तर के व्यवसायिक वर्ग तथा अव्यवसायिक वर्ग की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 3
स्नातक स्तर की उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता सम्बन्धित मध्यमान, मानक विचलन तथा t–मान

क्र0सं0	तुल्य समूह	संख्या(N)	मध्यमान (N)	मानक विचलन (S.D.)	df	t–मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च	25	37.20	8.95			
2.	निम्न	40	34.74	8.97	63	2.82	0.05 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त ताकिलका सं0 46 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 37.20 तथा मानक विचलन 8.95 है, तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 34.74 मानक विचलन 8.97 प्राप्त किया गया तथा दोनो मध्यमानों का ज मान 2.82 ज्ञात किया गया जो 0.05 सार्थक स्तर पर ज तालिका मान 2.00 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती हैै। तथा शोध परिकल्पना भ1 स्वीकृत की जाती है। शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति द्वारा स्पष्ट है कि छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक प्रभाव है।

निष्कर्ष व्याख्या

1. स्नातक स्तर के छात्रों के पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव है। प्रदत्तों के परिणाम में यह पाया गया कि छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनकी पर्यावरणीय जागरूकता पर पड़ने का कारण उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति के छात्र अच्छे कॉलेजों पढ़ते है तथा अच्छे वातावरण में रहते है तथा नवीन तकनीकी जैसे कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि माध्यमों से जुड़े रहते है। जिसके कारण वह अधिक जागरूक होते है। होते है।

2. स्नातक स्तर की छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सार्थक प्रभाव है।छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनकी पर्यावरणीय जागरूकता पर पड़ता है। जिसके प्रदत्तों के परिणाम में यह पाया गया कि छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव उनकी पर्यावरणीय जागरूकता पर पड़ने का कारण उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति के छात्रायें अच्छे कॉलेजों

पढ़ती है तथा अच्छे वातावरण में रहते है तथा नवीन तकनीकी जैसे कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि माध्यमों से जुड़े रहते है। जिसके कारण वह अधिक जागरूक होते है। प्रयुक्त शोध में सम्बन्धित प्रदत्तों में प्राप्त परिणामों में यह भी सामने आया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनकी पर्यावरणीय जागरूकता को अधिक प्रभावित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

गैरेट, एच0ई0 (2011) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना, नई दिल्ली।

गोयल, एम0के0 (1997), अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ सं0 331।

अग्रवाल, रीना (1992), डेवलपमेन्ट ऑफ इन्वायरमेन्टल अवेयरनेस थ्रो इंगलिश टीचिंग एन एक्सपेरीमेन्टल स्टडी, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, वॉ0 29 (1–2), 86–88।

नैगी, पी0एस0 (1995), पारिस्थितिकी विकास एवं पर्यावरण, भूगोल रस्तोगी एण्ड कम्पनी, सुभाष बाजार, मेरठ पृ0सं0 34।

जी0 फरा0 नोबल किम्बरले, मैक एण्ट जे0 कैन्डिल्स सोशियो इकोनोमिक बैंक ग्राउण्ड माडुलेट्स कागनेशन एचीवमेन्ट रिलेशनशिप इन रीडिंग, पेंसलवानिया फिलाडेल्फिया विश्वविद्यालय साइकालॉजिकल आब्सट्रेक्ट 2006 (सिम्बर) वॉ0 93 (9) 3160।

चक्रवर्ती, ए0 (1988), ए क्रिटकल स्टडी ऑफ इटेंलीजेंस, सोशियो इकोनोमिक बैकग्राउण्ड ऑफ द फैमली, एजूकेशन इन्वायरमेन्ट ऑफ द फैमली एण्ड क्वालिटी ऑफ स्कूल्स इन चिल्ड्रन, पी–एच0डी0 एजूकेशन, पूना विश्वविद्यालय।

चीफमैन, सुसैन एस0 (1995), दि इन्वेस्टिगेटिड दि इफेक्ट ऑफ इन्वायरमेन्टल पॉल्यूशन ऑन इन्टीग्रेटेड छारदा टिम्परी रिकार्डिंग ऑफ टास्क रिस्पांस, आब्सट्रेक इण्टरनेशनल 2006 (फरवरी) वॉ0 56 (2), 824–ए।

उचाट, डी0ए0 (1989), ए स्टडी ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट लेवल ऑफ एस्पिरेशन एण्ड इन्टरेस्ट एमंग श्री एडोलोसेन्स ऑफ सोशियों इकोनोमिक स्टेटस ग्रुप, पी–एच0डी0 मनोविज्ञान, बी0एच0यू0।

सारस्वत (1982), ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट इन रिलेशन टू एडजस्टमेन्ट, वैल्यूज, एकेडमिक एचीवमेन्ट, सोशियो इकोनोमिक स्टेटस एण्ड सेक्स ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स पी–एच0डी0 सोशल साइंस, आईआई0टी0 नई दिल्ली, फिथ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वॉ0 427।

साइटिक, ए0एम0 (1985), लिविंग इन दि इन्वायरमेन्ट ए सोर्स बुक फार एन्वायरमेन्टल एजूकेशन जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी 2000 (दिसम्बर), वॉ0 31 (12), 24–27।